दिल्ली सल्तनत का राजस्व सिद्धान्त–एक समग्र अध्ययन

डॉ. सुनील कुमार

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक जितने भी शासक एवं वंश हुए हैं उनका शासन एवं प्रशासन चलाने का एक तरीका, सिद्धान्त एवं विचारधारा रहा है। इसे ही राजत्व सिद्धान्त कहा जाता है। यहाँ हम दिल्ली सल्तनत के विभिन्न शासकों के राजत्व सिद्धान्त का अध्ययन कर रहे हैं। कुतुबुद्दीन ऐबक के द्वारा दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही अनेक शासकों एवं वंशों ने सल्तनत की तख्त संभाली एवं अपने सिद्धान्त पर शासन किया। कई शासकों को अपने राजत्व सिद्धान्त स्थापित करने का मौका ही नहीं मिला तथा कई ने अपने सिद्धान्त पर शासन किया।

इस प्रकार पूरे दिल्ली सल्तनत का राजत्व सिद्धान्त विभिन्न शासकों एवं वंशों के काल में एक समान नहीं रहा। क्योंकि सभी शासकों के कार्य करने का तरीका एवं उद्देश्य तथा परिस्थितियाँ अलग–अलग थी जिससे राजत्व सिद्धान्त में परिवर्तन तो आता ही। परंतु समग्र रूप से दिल्ली सल्तनत के राजत्व सिद्धान्त का अवलोकन किया जाए तो ये प्रमुख तत्व उभरते हैं – राज्य का दैवीय सिद्धान्त, निरंकुशता, सुल्तान की सर्वोच्चता, कुछ शासकों द्वारा धर्म एवं राजनीति का पृथक्करण का प्रयास, शासन–प्रशासन में योग्यता को प्रमुखता तथा सल्तनत के क्षेत्र विस्तार का प्रयास इत्यादि।